

इब्रानियों के नाम खत

?????????? ?? ?????

इब्रानियों के खत के मुसन्निफ़ का नाम अभी तक भेद बतौर पर्दे में रखा गया है। कुछ उलमा के ज़रिए पौलूस इस किताब के मुसन्निफ़ होने बतौर इम्कान पेश करते हैं। इब्रानियों के अलावा कोई और किताब मसीह की मसीहियत का काहिन बतौर इतने वाज़ेह तौर से पेश नहीं करती क्योंकि यह मसीह को हारून की कहानत से भी ऊपर ले जाती है, शरीयत और नबियों की कामिलियत का दावा पेश करती हैं यह किताब मसीह को ईमान का बानी और कामिल करने वाला पेश करती है (इब्रानियों 12:2)।

????? ?????? ?? ?????????? ?? ????

इसके लिखे जाने की तारीख़ तक्ररीबन ईस्वी 64 - 70 के बीच है।

इब्रानियों के खत को हज़रत मसही के आस्मान पर सऊद फ़र्माने के बाद और यरूशलेम की बर्बादी से पहले लिख गया था।

?????? ?????????????? ?????? ??????

इस खत को सब से पहले यहूदी मसीहियों के लिए लिखा गया था जो पुराने अहदनामे से वाक्किफ़कार थे जो दुबारा से यहूदियत की तरफ़ फिर जाने की आज्माइश में थे। माना जाता है कि इस के क़बूल कुनिन्दा पाने वाले काहिनों की एक बड़ी जमाअत भी थी जो मसीही ईमान में आकर उस की इताअत करते थे (आमाल 6:7)।

???? ??????????

इब्रानियों का मुसन्निफ़ अपने कारिडन को नसीहत देने के लिए लिखा कि वह मक्रामी यहूदी तालीम का इन्कार करे और मसीह येसू में ईमानदार बने रहें और यह जताएं कि येसू मसीह सब से

आला है। खुदा का बेटा, फ़रिश्तों, काहिनों, पुराने अहदनामे के रहनुमाओं या दुनिया के तमाम मज़ाहिब से ऊँचा और बेहतर है। सलीब पर मरने और मुर्दों में से जी उठने के ज़रिए येसू ईमान्दो के लिए नजात और हमेशा की जिन्दगी का वायदा करता है। मसीह की कुर्बानी हमारे गुनाहों के लिए पूरी तरह से कामिल थी। ईमान में कायम रहना खुदा को खुश करता है। हम अपना ईमान खुदा के ताबे होने के ज़रिए ज़ाहिर करते हैं।

?????

मसीह की बरतरी।

बैरूनी खाका

1. येसू मसीह तमाम फ़रिश्तों से आला है — 1:1-2:18
2. येसू मसीह शरिअत और पुराने अहद से आला है — 3:1-10:18
3. हर हालत में वफ़ादार रहने और आज्मायशों की बर्दाश्त के लिए एक बुलाहट — 10:19-12:29
4. आख़री नसीहतें और सलाम — 13:1-25

????? ?????? ?? ???????

1 पुराने ज़माने में खुदा ने बाप — दादा से हिस्सा — ब — हिस्सा और तरह — ब — तरह नबियों के ज़रिए कलाम करके,

2 इस ज़माने के आख़िर में हम से बेटे के ज़रिए कलाम किया, जिसे उसने सब चीज़ों का वारिस ठहराया और जिसके वसीले से उसने आलम भी पैदा किए।

3 वो उसके जलाल की रोशनी और उसकी ज़ात का नक्श होकर सब चीज़ों को अपनी कुदरत के कलाम से संभालता है। वो गुनाहों को धोकर 'आलम — ए — बाला पर खुदा की दहनी तरफ़ जा बैठा,

4 और फ़रिश्तों से इस क़दर बड़ा हो गया, जिस क़दर उसने मीरास में उनसे अफ़ज़ल नाम पाया।

5 क्यूँकि फ़रिश्तों में से उसने कब किसी से कहा,
 “तू मेरा बेटा है,
 आज तू मुझ से पैदा हुआ?”
 और फिर ये,
 “मैं उसका बाप हूँगा?”

6 और जब पहलौटे को दुनियाँ में फिर लाता है, तो कहता है,
 “खुदा के सब फ़रिश्ते उसे सिज्दा करें।”

7 और वो अपने फ़रिश्तों के बारे में ये कहता है,
 “वो अपने फ़रिश्तों को हवाएँ,
 और अपने खादिमों को आग के शो'ले बनाता है।”

8 मगर बेटे के बारे में कहता है,
 “ऐ खुदा, तेरा तख़्त हमेशा से हमेशा तक रहेगा,
 और तेरी बादशाही की 'लाठी रास्तबाज़ी की 'लाठी है।

9 तू ने रास्तबाज़ी से मुहब्बत और बदकारी से 'अदावत रखी,
 इसी वजह से खुदा, या'नी तेरे खुदा ने खुशी के तेल से
 तेरे साथियों की बनिस्बत तुझे ज़्यादा मसह किया।”

10 और ये कि, “ऐ खुदावन्द! तू ने शुरू में ज़मीन की नीव डाली,
 और आसमान तेरे हाथ की कारीगरी है।

11 वो मिट जाएँगे, मगर तू बाक़ी रहेगा; और
 वो सब पोशाक की तरह पुराने हो जाएँगे।

12 तू उन्हें चादर की तरह लपेटेगा,
 और वो पोशाक की तरह बदल जाएँगे:
 मगर तू वही रहेगा

और तेरे साल ख़त्म न होंगे।”

13 लेकिन उसने फ़रिश्तों में से किसी के बारे में कब कहा,
 “तू मेरी दहनी तरफ़ बैठ,
 जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँव तले की चौकी न कर दूँ?”

14 क्या वो सब खिदमत गुज़ार रूहें नहीं, जो नजात की मीरास पानेवालों की खातिर खिदमत को भेजी जाती हैं?

2

???? ???? ? ? ???? ???? ?

1 इसलिए जो बातें हम ने सुनी, उन पर और भी दिल लगाकर गौर करना चाहिए, ताकि बहक कर उनसे दूर न चले जाएँ।

2 क्योंकि जो कलाम फ़रिश्तों के ज़रिए फ़रमाया गया था, जब वो काईम रहा और हर कुसूर और नाफ़रमानी का ठीक ठीक बदला मिला,

3 तो इतनी बड़ी नजात से गाफ़िल रहकर हम क्यूँकर चल सकते हैं? जिसका बयान पहले खुदावन्द के वसीले से हुआ, और सुनने वालों से हमें पूरे — सबूत को पहुँचा।

4 और साथ ही खुदा भी अपनी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ निशानों, और 'अजीब कामों, और तरह तरह के मोज़िज़ों, और रूह — उल — कुद्दूस की ने'मतों के ज़रिए से उसकी गवाही देता रहा।

5 उसने उस आनेवाले जहान को जिसका हम ज़िक़ करते हैं, फ़रिश्तों के ताबे' नहीं किया।

6 बल्कि किसी ने किसी मौक़े पर ये बयान किया है, "इंसान क्या चीज़ है जो तू उसका ख़याल करता है?

या आदमज़ाद क्या है जो तू उस पर निगाह करता है?

7 तू ने उसे फ़रिश्तों से कुछ ही कम किया;

तू ने उस पर जलाल और 'इज़ज़त का ताज रखवा, और अपने हाथों के कामों पर उसे इस्तिथार बख़्शा।

8 तू ने सब चीज़ें ताबे' करके उसके क़दमों तले कर दी हैं।"

पस जिस सूरेत में उसने सब चीज़ें उसके ताबे' कर दीं, तो उसने कोई चीज़ ऐसी न छोड़ी जो उसके ताबे, न हो। मगर हम अब तक सब चीज़ें उसके ताबे' नहीं देखते।

9 अलबत्ता उसको देखते हैं जो फ़रिश्तों से कुछ ही कम किया गया, या'नी ईसा को मौत का दुःख सहने की वजह से जलाल और इज़्ज़त का ताज उसे पहनाया गया है, ताकि खुदा के फ़ज़ल से वो हर एक आदमी के लिए मौत का मज़ा चखे।

10 क्योंकि जिसके लिए सब चीज़ें हैं और जिसके वसीले से सब चीज़ें हैं, उसको यही मुनासिब था कि जब बहुत से बेटों को जलाल में दाखिल करे, तो उनकी नजात के बानी को दुखों के ज़रिए से कामिल कर ले।

11 इसलिए कि पाक करने वाला और पाक होनेवाला सब एक ही नस्ल से हैं, इसी ज़रिए वो उन्हें भाई कहने से नहीं शरमाता।

12 चुनाँचे वो फ़रमाता है,

“तेरा नाम मैं अपने भाइयों से बयान करूँगा,
कलीसिया में तेरी हम्द के गीत गाऊँगा।”

13 और फिर ये,

“देख मैं उस पर भरोसा रखूँगा।”

और फिर ये,

“देख मैं उन लड़कों समेत जिन्हें खुदा ने मुझे दिया।”

14 पस जिस सूरत में कि लड़के खून और गोशत में शरीक हैं, तो वो खुद भी उनकी तरह उनमें शरीक हुआ, ताकि मौत के वसीले से उसको जिसे मौत पर कुदरत हासिल थी, या'नी इब्नीस को, तबाह कर दे;

15 और जो उम्र भर मौत के डर से गुलामी में गिरफ़्तार रहे, उन्हें छुड़ा ले।

16 क्योंकि हक़ीक़त में वो फ़रिश्तों का नहीं, बल्कि अब्रहाम की नस्ल का साथ देता है।

17 पस उसको सब बातों में अपने भाइयों की तरह बनना ज़रूरी हुआ, ताकि उम्मत के गुनाहों का कफ़ारा देने के वास्ते, उन

बातों में जो खुदा से ता'अल्लुक रखती है, एक रहम दिल और दियानतदार सरदार काहिन बने।

18 क्योंकि जिस सूरत में उसने खुद की आजमाइश की हालत में दुःख उठाया, तो वो उनकी भी मदद कर सकता है जिनकी आजमाइश होती है।

3

????? ???? ? ???? ??

1 पस ऐ पाक भाइयों! तुम जो आसमानी बुलावे में शरीक हो, उस रसूल और सरदार काहिन ईसा पर गौर करो जिसका हम करते हैं;

2 जो अपने मुकर्रर करनेवाले के हक में दियानतदार था, जिस तरह मूसा खुदा के सारे घर में था।

3 क्योंकि वो मूसा से इस क्रदर ज़्यादा 'इज़्जत के लायक समझा गया, जिस क्रदर घर का बनाने वाला घर से ज़्यादा इज़्जतदार होता है।

4 चुनाँचे हर एक घर का कोई न कोई बनाने वाला होता है, मगर जिसने सब चीज़ें बनाईं वो खुदा है।

5 मूसा तो उसके सारे घर में खादिम की तरह दियानतदार रहा, ताकि आइन्दा बयान होनेवाली बातों की गवाही दे।

6 लेकिन मसीह बेटे की तरह उसके घर का मालिक है, और उसका घर हम हैं; बशर्ते कि अपनी दिलेरी और उम्मीद का फ़ख़्र आख़िर तक मज़बूती से काईम रखें।

7 पस जिस तरह कि पाक रूह कलाम में फ़रमाता है,
“अगर आज तुम उसकी आवाज़ सुनो,

8 तो अपने दिलों को सख़्त न करो,
जिस तरह गुस्सा दिलाने के वक़्त

आज़माइश के दिन जंगल में किया था।

9 जहाँ तुम्हारे बाप — दादा ने मुझे जाँचा

और आजमाया और चालीस बरस तक मेरे काम देखे।

10 इसलिए मैं उस पीढ़ी से नाराज़ हुआ,

और कहा, 'इनके दिल हमेशा गुमराह होते रहते हैं,

और उन्होंने मेरी राहों को नहीं पहचाना।

11 चुनाँचे मैंने अपने गुस्से में क्रसम खाई,

'ये मेरे आराम में दाखिल न होने पाएँगे'।”

12 ऐ भाइयों! खबरदार! तुम में से किसी का ऐसा बुरा और बे — ईमान दिल न हो, जो ज़िन्दा खुदा से फिर जाए।

13 बल्कि जिस रोज़ तक आज का दिन कहा जाता है, हर रोज़ आपस में नसीहत किया करो, ताकि तुम में से कोई गुनाह के धोखे में आकर सख्त दिल न हो जाए।

14 क्योंकि हम मसीह में शरीक हुए हैं, बशर्ते कि अपने शुरुआत के भरोसे पर आखिर तक मज़बूती से काईम रहें।

15 चुनाँचे कलाम में लिखा है

“अगर आज तुम उसकी आवाज़ सुनो, तो अपने दिलों को सख्त न करो, जिस तरह कि गुस्सा दिलाने के वक़्त किया था।”

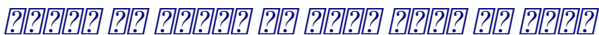
16 किन लोगों ने आवाज़ सुन कर गुस्सा दिलाया? क्या उन सब ने नहीं जो मूसा के वसीले से मिस्र से निकले थे?

17 और वो किन लोगों से चालीस बरस तक नाराज़ रहा? क्या उनसे नहीं जिन्होंने गुनाह किया, और उनकी लाशें वीराने में पड़ी रहीं?

18 और किनके बारे में उसने क्रसम खाई कि वो मेरे आराम में दाखिल न होने पाएँगे, सिवा उनके जिन्होंने नाफ़रमानी की?

19 गरज़ हम देखते हैं कि वो बे — ईमानी की वजह से दाखिल न हो सके।

4



1 पस जब उसके आराम में दाखिल होने का वादा बाक्री है तो हमें डरना चाहिए ऐसा न हो कि तुम में से कोई रहा हुआ मालूम हो

2 क्योंकि हमें भी उन ही की तरह खुशखबरी सुनाई गई, लेकिन सुने हुए कलाम ने उनको इसलिए कुछ फ़ाइदा न दिया कि सुनने वालों के दिलों में ईमान के साथ न बैठा।

3 और हम जो ईमान लाए, उस आराम में दाखिल होते हैं; जिस तरह उसने कहा, “मैंने अपने गुस्से में क्रसम खाई कि ये मेरे आराम में दाखिल न होने पाएँगे।” अगरचे दुनिया बनाने के वक़्त उसके काम हो चुके थे।

4 चुनाँचे उसने सातवें दिन के बारे में कलाम में इस तरह कहा, “खुदा ने अपने सब कामों को पूरा करके, सातवें दिन आराम किया।”

5 और फिर इस मुक़ाम पर है, “वो मेरे आराम में दाखिल न होने पाएँगे।”

6 पस जब ये बात बाक्री है कि कुछ उस आराम में दाखिल हों, और जिनको पहले खुशखबरी सुनाई गई थी वो नाफ़रमानी की वजह से दाखिल न हुए,

7 तो फिर एक खास दिन ठहर कर इतनी मुद्दत के बाद दा'ऊद की किताब में उसे आज का दिन कहता है। जैसा पहले कहा गया, “और आज तुम उसकी आवाज़ सुनो, तो अपने दिलों को सख़्त न करो।”

8 और अगर ईसा ने उन्हें आराम में दाखिल किया होता, तो वो उसके बाद दुसरे दिन का ज़िक्र न करता।

9 पस खुदा की उम्मत के लिए सबत का आराम बाक्री है'

10 क्योंकि जो उसके आराम में दाखिल हुआ, उसने भी खुदा की तरह अपने कामों को पूरा करके आराम किया।

11 पस आओ, हम उस आराम में दाखिल होने की कोशिश करें, ताकि उनकी तरह नाफ़रमानी कर के कोई शख्स गिर न पड़े।

12 क्यूँकि खुदा का कलाम ज़िन्दा, और असरदार, और हर एक दोधारी तलवार से ज़्यादा तेज़ है; और जान और रूह और बन्द, बन्द और गूदे को जुदा करके गुज़र जाता है, और दिल के खयालों और इरादों को जाँचता है।

13 और खुदा की नज़र में मख़्लूक़ात की कोई चीज़ छिपी नहीं, बल्कि जिससे हम को काम है उसकी नज़रों में सब चीज़ें खुली और बेपर्दा हैं।

14 पस जब हमारा एक ऐसा बड़ा सरदार काहिन है जो आसमानों से गुज़र गया, या'नी खुदा का बेटा ईसा, तो आओ हम अपने इकरार पर काईम रहें।

15 क्यूँकि हमारा ऐसा सरदार काहिन नहीं जो हमारी कमज़ोरियों में हमारा हमदर्द न हो सके; बल्कि वो सब बातों में हमारी तरह आजमाया गया, तोभी बेगुनाह रहा।

16 पस आओ, हम फ़ज़ल के तख़्त के पास दिलेरी से चलें, ताकि हम पर रहम हो और फ़ज़ल हासिल करें जो ज़रूरत के वक़्त हमारी मदद करे।

5

1 अब इंसान ों में से चुने गए इमाम — ए — आज़म को इस लिए मुकर्रर किया जाता है कि वह उन की खातिर खुदा की ख़िदमत करे, ताकि वह गुनाहों के लिए नज़राने और कुर्बानियाँ पेश करे।

2 वह जाहिल और आवारा लोगों के साथ नर्म सुलूक रख सकता है, क्यूँकि वह खुद कई तरह की कमज़ोरियों की गिरफ़्त में होता है।

3 यही वजह है कि उसे न सिर्फ़ क्रौम के गुनाहों के लिए बल्कि अपने गुनाहों के लिए भी कुर्बानियाँ चढ़ानी पड़ती हैं।

4 और कोई अपनी मर्जी से इमाम — ए — आजम का 'इज़्जत वाला ओहदा नहीं अपना सकता बल्कि ज़रूरी है कि खुदा उसे हारून की तरह बुला कर मुकर्रर करे।

5 इसी तरह मसीह ने भी अपनी मर्जी से इमाम — ए — आजम का 'इज़्जत वाला ओहदा नहीं अपनाया। इस के बजाए खुदा ने उस से कहा, “तू मेरा बेटा है आज तू मुझसे पैदा हुआ है।”

6 कहीं और वह फ़रमाता है, “तू अबद तक इमाम है, ऐसा इमाम जैसा मलिक — ए — सिद्क़ था।”

7 जब ईसा इस दुनिया में था तो उस ने ज़ोर ज़ोर से पुकार कर और आँसू बहा बहा कर उसे दुआएँ और इल्तिजाएँ पेश कीं जो उसको मौत से बचा सकता था और खुदा तरसी की वजह से उसकी सुनी गई।

8 वह खुदा का फ़र्ज़न्द तो था, तो भी उस ने दुःख उठाने से फ़रमाँबरदारी सीखी।

9 जब वह कामिलियत तक पहुँच गया तो वह उन सब की अबदी नजात का सरचश्मा बन गया जो उस की सुनते हैं।

10 उस वक़्त खुदा ने उसे इमाम — ए — आजम भी मुतअय्युन किया, ऐसा इमाम जैसा मलिक — ए — सिद्क़ था।

?????? ?????????? ?? ?????

11 इस के बारे में हम ज़्यादा बहुत कुछ कह सकते हैं, लेकिन हम मुश्किल से इस का खुलासा कर सकते हैं, क्योंकि आप सुनने में सुस्त हैं।

12 असल में इतना वक़्त गुज़र गया है कि अब आप को खुद उस्ताद होना चाहिए। अफ़सोस कि ऐसा नहीं है बल्कि आप को इस की ज़रूरत है कि कोई आप के पास आ कर आप को खुदा के कलाम की बुनियादी सच्चाइयाँ दुबारा सिखाए। आप अब तक सख़्त गिज़ा नहीं खा सकते बल्कि आप को दूध की ज़रूरत है।

13 जो दूध ही पी सकता है वह अभी छोटा बच्चा ही है और वह रास्तबाज़ी की तालीम से ना समझ है।

14 इस के मुक़ाबिले में सख्त गिज़ा बालिगों के लिए है जिन्हों ने अपनी बलूग़त के ज़रिए अपनी रुहानी ज़िन्दगी को इतनी तर्बियत दी है कि वह भलाई और बुराई में पहचान कर सकते हैं।

6

1 इस लिए आएँ, हम मसीह के बारे में बुनियादी तालीम को छोड़ कर बलूग़त की तरफ़ आगे बढ़ें। क्यूँकि ऐसी बातें दोहराने की ज़रूरत नहीं होनी चाहिए जिन से ईमान की बुनियाद रखी जाती है, मसलन मौत तक पहुँचाने वाले काम से तौबा,

2 बपतिस्मा क्या है, किसी पर हाथ रखने की तालीम, मुर्दों के जी उठने और हमेशा सज़ा पाने की तालीम।

3 चुनाँचे खुदा की मर्ज़ी हुई तो हम यह छोड़ कर आगे बढ़ेंगे।

4 नामुमकिन है कि उन्हें बहाल करके दुबारा तौबा तक पहुँचाया जाए जिन्हों ने अपना ईमान छोड़ दिया हो। उन्हें तो एक बार खुदा के नूर में लाया गया था, उन्हीं ने आसमान की ने'अमत का मज़ा चख लिया था, वह रूह — उल — कुदूस में शरीक हुए,

5 उन्हीं ने खुदा के कलाम की भलाई और आने वाले ज़माने की ताक़तों का तज़ुर्बा किया था।

6 और फिर उन्हीं ने अपना ईमान छोड़ दिया! ऐसे लोगों को बहाल करके दुबारा तौबा तक पहुँचाना नामुमकिन है। क्यूँकि ऐसा करने से वह खुदा के फ़र्ज़न्द को दुबारा मस्तूब करके उसे लान — तान का निशाना बना देते हैं।

7 खुदा उस ज़मीन को बर्क़त देता है जो अपने पर बार बार पडने वाली बारिश को ज़ब्ब करके ऐसी फ़सल पैदा करती है जो खेतीबाड़ी करने वाले के लिए फ़ाइदामन्द हो।

8 लेकिन अगर वह सिर्फ कांटे दार पौदे और ऊंटकटारे पैदा करे तो वह बेकार है और इस खतरे में है कि उस पर ला'नत भेजी जाए। अन्जाम — ए — कार उस पर का सब कुछ जलाया जाएगा।

9 लेकिन ऐ अज़ीज़ो! अगरचे हम इस तरह की बातें कर रहे हैं तो भी हमारा भरोसा यह है कि आप को वह बेहतरीन बर्कतें हासिल हैं जो नजात से मिलती हैं।

10 क्योंकि खुदा बेइन्साफ़ नहीं है। वह आप का काम और वह मुहब्बत नहीं भूलेगा जो आप ने उस का नाम ले कर ज़ाहिर की जब आप ने पाक लोगों की खिदमत की बल्कि आज तक कर रहे हैं।

11 लेकिन हमारी बड़ी ख्वाहिश यह है कि आप में से हर एक इसी सरगमी का इज़हार आखिर तक करता रहे ताकि जिन बातों की उम्मीद आप रखते हैं वह हकीकत में पूरी हो जाएँ।

12 हम नहीं चाहते कि आप सुस्त हो जाएँ बल्कि यह कि आप उन के नमूने पर चले जो ईमान और सब्र से वह कुछ मीरास में पा रहे हैं जिस का वादा खुदा ने किया है।

?????? ?? ????? ??????? ?? ?????

13 जब खुदा ने क़सम खा कर अब्रहाम से वादा किया तो उस ने अपनी ही क़सम खा कर यह वादा किया। क्योंकि कोई और नहीं था जो उस से बड़ा था जिस की क़सम वह खा सकता।

14 उस वक़्त उस ने कहा, “मैं ज़रूर तुझे बहुत बर्कत दूँगा, और मैं यकीनन तुझे ज़्यादा औलाद दूँगा।”

15 इस पर अब्रहाम ने सब्र से इन्तिज़ार करके वह कुछ पाया जिस का खुदा ने वादा किया था।

16 क़सम खाते वक़्त लोग उस की क़सम खाते हैं जो उन से बड़ा होता है। इस तरह से क़सम में बयानकरदा बात की तस्दीक बहस — मुबाहसा की हर गुन्जाइश को खत्म कर देती है।

17 खुदा ने भी क्रसम खा कर अपने वादे की तस्दीक की। क्योंकि वह अपने वादे के वारिसों पर साफ़ ज़ाहिर करना चाहता था कि उस का इरादा कभी नहीं बदलेगा।

18 गरज़, यह दो बातें क़ाईम रही हैं, खुदा का वादा और उस की क्रसम। वह इन्हें न तो बदलेगा न इन के बारे में झूठ बोलेगा। यूँ हम जिन्हों ने उस के पास पनाह ली है बड़ी तसल्ली पा कर उस उम्मीद को मज़बूती से थामे रख सकते हैं जो हमें पेश की गई है।

19 क्योंकि यह उम्मीद हमारी जान के लिए मज़बूत लंगर है। और यह आसमानी बैत — उल — मुक़द्दस के पाकतरिन कमरे के पर्दे में से गुज़र कर उस में दाख़िल होती है।

20 वहीं ईसा हमारे आगे आगे जा कर हमारी खातिर दाख़िल हुआ है। यूँ वह मलिक — ए — सिद्क की तरह हमेशा के लिए इमाम — ए — आज़म बन गया है।

7

???? — ? — ??????? ?????????? ?? ????? ??

1 यह मलिक — ए — सिद्क, सालिम का बादशाह और खुदा — ए — तआला का इमाम था। जब अब्रहाम चार बादशाहों को शिकस्त देने के बाद वापस आ रहा था तो मलिक — ए — सिद्क उस से मिला और उसे बर्क़त दी।

2 इस पर अब्रहाम ने उसे तमाम लूट के माल का दसवाँ हिस्सा दे दिया। अब मलिक — ए — सिद्क का मतलब रास्तबाज़ी का बादशाह है। दूसरे, सालिम का बादशाह का मतलब सलामती का बादशाह है।

3 न उस का बाप या माँ है, न कोई नसबनामा। उसकी ज़िन्दगी की न तो शुरुआत है, न खातिमा। खुदा के फ़र्ज़न्द की तरह वह हमेशा तक इमाम रहता है।

4 गौर करें कि वह कितना अजीम था। हमारे बापदादा अब्रहाम ने उसे लूटे हुए माल का दसवाँ हिस्सा दे दिया।

5 अब शरी'अत माँग करती है कि लावी की वह औलाद जो इमाम बन जाती है क्रौम यानी अपने भाइयों से पैदावार का दसवाँ हिस्सा ले, हालाँकि उन के भाई अब्रहाम की औलाद हैं।

6 लेकिन मलिक — ए — सिद्क लावी की औलाद में से नहीं था। तो भी उस ने अब्रहाम से दसवाँ हिस्सा ले कर उसे बर्कत दी जिस से खुदा ने वादा किया था।

7 इस में कोई शक नहीं कि कम हैसियत शख्स को उस से बर्कत मिलती है जो ज़्यादा हैसियत का हो।

8 जहाँ लावी इमामों का ताल्लुक है खत्म होने वाले इंसान दसवाँ हिस्सा लेते हैं। लेकिन मलिक — ए — सिद्क के मु'आमले में यह हिस्सा उस को मिला जिस के बारे में गवाही दी गई है कि वह ज़िन्दा रहता है।

9 यह भी कहा जा सकता है कि जब अब्रहाम ने माल का दसवाँ हिस्सा दे दिया तो लावी ने उस के ज़रिए भी यह हिस्सा दिया, हालाँकि वह खुद दसवाँ हिस्सा लेता है।

10 क्योंकि अगरचे लावी उस वक्त पैदा नहीं हुआ था तो भी वह एक तरह से अब्रहाम के जिस्म में मौजूद था जब मलिक — ए — सिद्क उस से मिला।

11 अगर लावी की कहानित (जिस पर शरी'अत मुन्हसिर थी) कामलियत पैदा कर सकती तो फिर एक और क्रिस्म के इमाम की क्या ज़रूरत होती, उस की जो हारून जैसा न हो बल्कि मलिक — ए — सिद्क जैसा?

12 क्योंकि जब भी कहानित बदल जाती है तो लाज़िम है कि शरी'अत में भी तब्दीली आए।

13 और हमारा खुदावन्द जिस के बारे में यह बयान किया गया है वह एक अलग कबीले का फ़र्द था। उस के कबीले के किसी भी

फ़र्द ने इमाम की ख़िदमत अदा नहीं की।

14 क्योंकि साफ़ मालूम है कि खुदावन्द मसीह यहूदाह क़बीले का फ़र्द था, और मूसा ने इस क़बीले को इमामों की ख़िदमत में शामिल न किया।

15 मुआमला ज़्यादा साफ़ हो जाता है। एक अलग इमाम ज़ाहिर हुआ है जो मलिक — ए — सिद्क़ जैसा है।

16 वह लावी के क़बीले का फ़र्द होने से इमाम न बना जिस तरह शरी'अत की चाहत थी, बल्कि वह न ख़त्म होने वाली ज़िन्दगी की कुव्वत ही से इमाम बन गया।

17 क्योंकि कलाम — ए — मुक़द्दस फ़रमाता है,
कि तू मलिक — ए — सिद्क़ के तौर पर
अबद तक काहिन है।

18 यूँ पुराने हुक्म को रद्द कर दिया जाता है, क्योंकि वह कमज़ोर और बेकार था

19 (मूसा की शरी'अत तो किसी चीज़ को कामिल नहीं बना सकती थी) और अब एक बेहतर उम्मीद मुहय्या की गई है जिस से हम खुदा के करीब आ जाते हैं।

20 और यह नया तरीका खुदा की क़सम से काईम हुआ। ऐसी कोई क़सम न खाई गई जब दूसरे इमाम बने।

21 लेकिन ईसा एक क़सम के ज़रिए इमाम बन गया जब खुदा ने फ़रमाया।

“खुदा ने क़सम खाई है और वो इससे अपना मन नहीं बदलेगा:
तुम अबद तक के लिये इमाम है।”

22 इस क़सम की वजह से ईसा एक बेहतर अहद की ज़मानत देता है।

23 एक और बदलाव, पुराने निज़ाम में बहुत से इमाम थे, क्योंकि मौत ने हर एक की ख़िदमत मद्दूद किए रखी।

24 लेकिन चूँकि ईसा हमेशा तक ज़िन्दा है इस लिए उस की कहानित कभी भी खत्म नहीं होगी।

25 यूँ वह उन्हें अबदी नजात दे सकता है जो उस के वसीले से खुदा के पास आते हैं, क्योंकि वह अबद तक ज़िन्दा है और उन की शफ़ाअत करता रहता है।

26 हमें ऐसे ही इमाम — ए — आज़म की ज़रूरत थी। हाँ, ऐसा इमाम जो मुक़द्दस, बेकुसूर, बेदाग़ा, गुनाहगारों से अलग और आसमानों से बुलन्द हुआ है।

27 उसे दूसरे इमामों की तरह इस की ज़रूरत नहीं कि हर रोज़ कुर्बानियाँ पेश करे, पहले अपने लिए फिर क्रौम के लिए। बल्कि उस ने अपने आप को पेश करके अपनी इस कुर्बानी से उन के गुनाहों को एक बार सदा के लिए मिटा दिया।

28 मूसा की शरी'अत ऐसे लोगों को इमाम — ए — आज़म मुक़र्रर करती है जो कमज़ोर हैं। लेकिन शरी'अत के बाद खुदा की क़सम फ़र्ज़न्द को इमाम — ए — आज़म मुक़र्रर करती है, और यह खुदा का फ़र्ज़न्द हमेशा तक कामिल है।

8

????? ?????? ?????? — ? — ????? ??

1 जो कुछ हम कह रहे हैं उस की ख़ास बात यह है, हमारा एक ऐसा इमाम — ए — आज़म है जो आसमान पर जलाली खुदा के तख़्त के दहने हाथ बैठा है।

2 वहाँ वह मक़्दस में ख़िदमत करता है, उस हकीकी मुलाक़ात के ख़ेमे* में जिसे इंसानी हाथों ने खड़ा नहीं किया बल्कि खुदा ने।

3 हर इमाम — ए — आज़म को नज़राने और कुर्बानियाँ पेश करने के लिए मुक़र्रर किया जाता है। इस लिए लाज़िम है कि

* 8:2 ?????? इबादत की जगह थी जब तक सुलैमान ने हैकल नहीं बनाया था

हमारे इमाम — ए — आजम के पास भी कुछ हो जो वह पेश कर सके।

4 अगर यह दुनिया में होता तो इमाम — ए — आजम न होता, क्योंकि यहाँ इमाम तो हैं जो शरी'अत के लिहाज़ से नज़राने पेश करते हैं।

5 जिस मक्दिस में वह ख़िदमत करते हैं वह उस मक्दिस की सिर्फ़ नक़ली सूरत और साया है जो आसमान पर है। यही वजह है कि खुदा ने मूसा को मुलाक़ात का ख़ेमा बनाने से पहले आगाह करके यह कहा, “गौर कर कि सब कुछ बिल्कुल उस नमूने के मुताबिक़ बनाया जाए जो मैं तुझे यहाँ पहाड़ पर दिखाता हूँ।”

6 लेकिन जो ख़िदमत ईसा को मिल गई है वह दुनिया के इमामों की ख़िदमत से कहीं बेहतर है, उतनी बेहतर जितना वह अह्द जिस का दरमियानी ईसा है पुराने अह्द से बेहतर है। क्योंकि यह अह्द बेहतर वादों की बुनियाद पर बाँधा गया।

7 अगर पहला अह्द बेइल्ज़ाम होता तो फिर नए अह्द की ज़रूरत न होती।

8 लेकिन खुदा को अपनी क़ौम पर इल्ज़ाम लगाना पड़ा। उस ने कहा,

“खुदावन्द फ़रमाता है कि देख! वो दिन आते हैं कि मैं इस्राईल के घराने और यहूदाह के घराने से एक नया 'अह्द बाँधूंगा।

9 यह उस अह्द की तरह नहीं होगा जो मैंने उनके बाप दादा से उस दिन बाँधा था,

जब मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाने के लिए उनका हाथ पकड़ा था,

इस वास्ते कि वो मेरे अह्द पर क़ाईम नहीं रहे

और खुदा वन्द फ़रमाता है कि मैंने उनकी तरफ़ कुछ तवज्जह न की।

10 खुदावन्द फ़रमाता है कि,

जो अहद इस्राईल के घराने से उनदिनों के बाद बाँधूंगा, वो ये है कि मैं अपने कानून उनके ज़हन में डालूँगा, और उनके दिलों पर लिखूँगा, और मैं उनका खुदा हूँगा, और वो मेरी उम्मत होंगे।

11 और हर शख्स अपने हम वतन और अपने भाई को ये तालीम न देगा कि तू खुदावन्द को पहचान, क्योंकि छोटे से बड़े तक सब मुझे जान लेंगे।

12 क्योंकि मैं उन का कुसूर मुआफ़ करूँगा। और मैं उनके गुनाहों को याद ना रखूँगा।”

13 इन अल्फ़ाज़ में खुदा एक नए अहद का ज़िक्र करता है और यूँ पुराने अहद को रद्द कर देता है। और जो रद्द किया और पुराना है उस का अन्जाम करीब ही है।

9

???????? ???? ? ? ???? ? ? ? ?

1 जब पहला अहद बाँधा गया तो इबादत करने के लिए हिदायत दी गई। ज़मीन पर एक मक्दिस भी बनाया गया,

2 एक खेमा जिस के पहले कमरे में शमादान, मेज़ और उस पर पड़ी मख्सूस की गई रोटियाँ थीं। उस का नाम “मुकद्दस कमरा” था।

3 उस के पीछे एक और कमरा था जिस का नाम “पाकतरीन कमरा” था। पहले और दूसरे कमरे के दरमियान बाक़ी दरवाज़े पर पर्दा लगा था।

4 इस पिछले कमरे में बख़ूर जलाने के लिए सोने की कुर्बानगाह और अहद का सन्दूक था। अहद के सन्दूक पर सोना मढा हुआ था और उस में तीन चीज़ें थीं: सोने का मर्तबान जिस में मन भरा था, हारून की वह लाठी जिस से कोंपलें फ़ूट निकली थीं और पत्थर की वह दो तख़्तियाँ जिन पर अहद के अहकाम लिखे थे।

5 सन्दूक पर इलाही जलाल के दो करूबी फ़रिश्ते लगे थे जो सन्दूक के ढकने को साया देते थे जिस का नाम “कफ़फ़ारा का ढकना” था। लेकिन इस जगह पर हम सब कुछ मज़ीद तफ़्सील से बयान नहीं करना चाहते।

6 यह चीज़ें इसी तरतीब से रखी जाती हैं। जब इमाम अपनी ख़िदमत के फ़राइज़ अदा करते हैं तो बाक्काइदगी से पहले कमरे में जाते हैं।

7 लेकिन सिर्फ़ इमाम — ए — आज़म ही दूसरे कमरे में दाख़िल होता है, और वह भी साल में सिर्फ़ एक दफ़ा। जब भी वह जाता है वह अपने साथ ख़ून ले कर जाता है जिसे वह अपने और क्रौम के लिए पेश करता है ताकि वह गुनाह मिट जाएँ जो लोगों ने भूलचूक में किए होते हैं।

8 इस से रूह — उल — कुदूस दिखाता है कि पाकतरिन कमरे तक रसाई उस वक़्त तक ज़ाहिर नहीं की गई थी जब तक पहला कमरा इस्तेमाल में था।

9 यह मिजाज़न मौजूदा ज़माने की तरफ़ इशारा है। इस का मतलब यह है कि जो नज़राने और कुर्बानियाँ पेश की जा रही हैं वह इबादत गुज़ार दिल को पाक — साफ़ करके कामिल नहीं बना सकतीं।

10 क्योंकि इन का ताल्लुक सिर्फ़ खाने — पीने वाली चीज़ों और गुस्ल की मुख़्तलिफ़ रस्मों से होता है, ऐसी ज़ाहिरी हिदायत जो सिर्फ़ नए निज़ाम के आने तक लागू हैं।

11 लेकिन अब मसीह आ चुका है, उन अच्छी चीज़ों का इमाम — ए — आज़म जो अब हासिल हुई हैं। जिस ख़ेमे में वह ख़िदमत करता है वह कहीं ज़्यादा अज़ीम और कामिल है। यह ख़ेमा इंसानी हाथों से नहीं बनाया गया यानी यह इस कायनात का हिस्सा नहीं है।

12 जब मसीह एक बार सदा के लिए ख़ेमे के पाकतरिन कमरे में

दाखिल हुआ तो उस ने कुर्बानियाँ पेश करने के लिए बकरों और बछड़ों का खून इस्तेमाल न किया। इस के बजाए उस ने अपना ही खून पेश किया और यूसुफ हमारे लिए हमेशा की नजात हासिल की।

13 पुराने निज़ाम में बैल — बकरों का खून और जवान गाय की राख नापाक लोगों पर छिड़के जाते थे ताकि उन के जिस्म पाक — साफ़ हो जाएँ।

14 अगर इन चीज़ों का यह असर था तो फिर मसीह के खून का क्या ज़बरदस्त असर होगा! अज़ली रूह के ज़रिए उस ने अपने आप को बेदाग़ कुर्बानी के तौर पर पेश किया। यूसुफ उस का खून हमारे ज़मीर को मौत तक पहुँचाने वाले कामों से पाक — साफ़ करता है ताकि हम ज़िन्दा खुदा की ख़िदमत कर सकें।

15 यही वजह है कि मसीह एक नए अह्द का दरमियानी है। मक़सद यह था कि जितने लोगों को खुदा ने बुलाया है उन्हें खुदा की वादा की हुई और हमेशा की मीरास मिले। और यह सिर्फ़ इस लिए मुम्किन हुआ है कि मसीह ने मर कर फ़िदया दिया ताकि लोग उन गुनाहों से छुटकारा पाएँ जो उन से उस वक़्त सरज़द हुए जब वह पहले अह्द के तहत थे।

16 जहाँ वसीयत है वहाँ ज़रूरी है कि वसीयत करने वाले की मौत की तस्दीक़ की जाए।

17 क्योंकि जब तक वसीयत करने वाला ज़िन्दा हो वसीयत बे असर होती है। इस का असर वसीयत करने वाले की मौत ही से शुरू होता है।

18 यही वजह है कि पहला अह्द बाँधते वक़्त भी खून इस्तेमाल हुआ।

19 क्योंकि पूरी क्रौम को शरी'अत का हर हुक्म सुनाने के बाद मूसा ने बछड़ों का खून पानी से मिला कर उसे ज़ूफ़े के गुच्छे और

क्रिमिज़ी रंग के धागे के ज़रिए शरी'अत की किताब और पूरी क्रौम पर छिड़का।

20 उस ने कहा, “यह खून उस अह्द की तस्दीक करता है जिस की पैरवी करने का हुक्म खुदा ने तुम्हें दिया है।”

21 इसी तरह मूसा ने यह खून मुलाक्रात के खेमे और इबादत के तमाम सामान पर छिड़का।

22 न सिर्फ़ यह बल्कि शरी'अत तक्राज़ा करती है कि तक्ररीबन हर चीज़ को खून ही से पाक — साफ़ किया जाए बल्कि खुदा के हुज़ूर खून पेश किए बग़ैर मुआफ़ी मिल ही नहीं सकती।

23 गरज़, ज़रूरी था कि यह चीज़ें जो आसमान की असली चीज़ों की नक़ली सूरतें हैं पाक — साफ़ की जाएँ। लेकिन आसमानी चीज़ें खुद ऐसी कुर्बानियों की तलब करती हैं जो इन से कहीं बेहतर हों।

24 क्योंकि मसीह सिर्फ़ इंसानी हाथों से बने मक्दिस में दाख़िल नहीं हुआ जो असली मक्दिस की सिर्फ़ नक़ली सूरत थी बल्कि वह आसमान में ही दाख़िल हुआ ताकि अब से हमारी खातिर खुदा के सामने हाज़िर हो।

25 दुनिया का इमाम — ए — आज़म तो सालाना किसी और (यानी जानवर) का खून ले कर पाकतरीन कमरे में दाख़िल होता है। लेकिन मसीह इस लिए आसमान में दाख़िल न हुआ कि वह अपने आप को बार बार कुर्बानी के तौर पर पेश करे।

26 अगर ऐसा होता तो उसे दुनिया की पैदाइश से ले कर आज तक बहुत बार दुःख सहना पड़ता। लेकिन ऐसा नहीं है बल्कि अब वह ज़मानो के खातिमें पर एक ही बार सदा के लिए ज़ाहिर हुआ ताकि अपने आप को कुर्बान करने से गुनाह को दूर करे।

27 एक बार मरना और खुदा की अदालत में हाज़िर होना हर इंसान के लिए मुकर्रर है।

28 इसी तरह मसीह को भी एक ही बार बहुतों के गुनाहों को उठा कर ले जाने के लिए कुर्बान किया गया। दूसरी बार जब वह ज़ाहिर होगा तो गुनाहों को दूर करने के लिए ज़ाहिर नहीं होगा बल्कि उन्हें नजात देने के लिए जो शिद्दत से उस का इन्तिज़ार कर रहे हैं।

10

???? ???? ?? ???? ?? ????? ?? ?????????

1 मूसा की शरी'अत आने वाली अच्छी और असली चीज़ों की सिर्फ़ नक़ली सूरत और साया है। यह उन चीज़ों की असली शक़ल नहीं है। इस लिए यह उन्हें कभी भी कामिल नहीं कर सकती जो साल — ब — साल और बार बार खुदा के हुज़ूर आ कर वही कुर्बानियाँ पेश करते रहते हैं।

2 अगर वह कामिल कर सकती तो कुर्बानियाँ पेश करने की ज़रूरत न रहती। क्यूँकि इस सूरत में इबादत करने से एक बार सदा के लिए पाक — साफ़ हो जाते और उन्हें गुनाहगार होने का शऊर न रहता।

3 लेकिन इस के बजाए यह कुर्बानियाँ साल — ब — साल लोगों को उन के गुनाहों की याद दिलाती हैं।

4 क्यूँकि मुम्किन ही नहीं कि बैल — बकरों का खून गुनाहों को दूर करे।

5 इस लिए मसीह दुनिया में आते वक़्त खुदा से कहता है, कि तूने“

कुर्बानी और नज़र को पसन्द ना किया
बल्कि मेरे लिए एक बदन तैयार किया।

6 राख होने वाली कुर्बानियाँ और गुनाह की कुर्बानियों से तू खुश न हुआ।”

7 फिर मैं बोल उठा, ऐ खुदा, मैं हाज़िर हूँ ताकि तेरी मज़ी पूरी करूँ।

8 पहले मसीह कहता है, “न तू कुर्बानियाँ, नज़रें, राख होने वाली कुर्बानियाँ या गुनाह की कुर्बानियाँ चाहता था, न उन्हें पसन्द करता था।” अगरचे शरी'अत इन्हें पेश करने का मुतालबा करती है।

9 फिर वह फ़रमाता है, “मैं हाज़िर हूँ ताकि तेरी मज़ी पूरी करूँ।” यूँ वह पहला निज़ाम खत्म करके उस की जगह दूसरा निज़ाम काईम करता है।

10 और उस की मज़ी पूरी हो जाने से हमें ईसा मसीह के बदन के वसीले से खास — ओ — मुक़द्दस किया गया है। क्योंकि उसे एक ही बार सदा के लिए हमारे लिए कुर्बान किया गया।

11 हर इमाम रोज़ — ब — रोज़ मक्दिदस में खड़ा अपनी खिदमत के फ़राइज़ अदा करता है। रोज़ाना और बार बार वह वही कुर्बानियाँ पेश करता रहता है जो कभी भी गुनाहों को दूर नहीं कर सकतीं।

12 लेकिन मसीह ने गुनाहों को दूर करने के लिए एक ही कुर्बानी पेश की, एक ऐसी कुर्बानी जिस का असर सदा के लिए रहेगा। फिर वह खुदा के दहने हाथ बैठ गया।

13 वहीं वह अब इन्तिज़ार करता है जब तक खुदा उस के दुश्मनों को उस के पाँओ की चौकी न बना दे।

14 यूँ उस ने एक ही कुर्बानी से उन्हें सदा के लिए कामिल बना दिया है जिन्हें पाक किया जा रहा है।

15 रूह — उल — कुद्दूस भी हमें इस के बारे में गवाही देता है। पहले वह कहता है,

16 “खुदा फ़रमाता है कि, जो 'अहद मैं उन दिनों के बाद उनसे बाँधूंगा वो ये है कि मैं अपने क़ानून उन के दिलों पर लिखूंगा

और उनके ज़हन में डालूँगा।”

17 फिर वह कहता है, “उस वक्रत से मैं उन के गुनाहों और बुराइयों को याद नहीं करूँगा।”

18 और जहाँ इन गुनाहों की मुआफ़ी हुई है वहाँ गुनाहों को दूर करने की कुर्बानियों की ज़रूरत ही नहीं रही।

19 चुनाँचे भाइयों, अब हम ईसा के खून के वसीले से पूरे यकीन के साथ पाकतरीन कमरे में दाख़िल हो सकते हैं।

20 अपने बदन की कुर्बानी से ईसा ने उस कमरे के पर्दे में से गुज़रने का एक नया और ज़िन्दगीबख़्श रास्ता खोल दिया।

21 हमारा एक अज़ीम इमाम — ए — आज़म है जो खुदा के घर पर मुकर्रर है।

22 इस लिए आएँ, हम खुलूसदिली और ईमान के पूरे यकीन के साथ खुदा के हुज़ूर आएँ। क्यूँकि हमारे दिलों पर मसीह का खून छिड़का गया है ताकि हमारे मुजरिम दिल साफ़ हो जाएँ। और, हमारे बदनो को पाक — साफ़ पानी से धोया गया है।

23 आएँ, हम मज़बूती से उस उम्मीद को थामे रखें जिस का इक्कार हम करते हैं। हम लड़खड़ा न जाएँ, क्यूँकि जिस ने इस उम्मीद का वादा किया है वह वफ़ादार है।

24 और आएँ, हम इस पर ध्यान दें कि हम एक दूसरे को किस तरह मुहब्बत दिखाने और नेक काम करने पर उभार सकें।

25 हम एकसाथ जमा होने से बाज़ न आएँ, जिस तरह कुछ की आदत बन गई है। इस के बजाए हम एक दूसरे की हौसला अफ़ज़ाई करें, खासकर यह बात मद्द — ए — नज़र रख कर कि खुदावन्द के दिन के आने तक।

26 ख़बरदार! अगर हम सच्चाई जान लेने के बाद भी जान — बूझ कर गुनाह करते रहें तो मसीह की कुर्बानी इन गुनाहों को दूर नहीं कर सकेगी।

27 फिर सिर्फ़ खुदा की अदालत की हौलनाक उम्मीद बाक़ी रहेगी, उस भड़कती हुई आग की जो खुदा के मुखालिफ़ों को ख़त्म कर डालेगी।

28 जो मूसा की शरी'अत रद्द करता है उस पर रहम नहीं किया जा सकता बल्कि अगर दो या इस से ज़्यादा लोग इस जुर्म की गवाही दें तो उसे सज़ा — ए — मौत दी जाए।

29 तो फिर क्या ख़याल है, वह कितनी सख़्त सज़ा के लायक़ होगा जिस ने खुदा के फ़र्ज़न्द को पाँओ तले रौंदा? जिस ने अह्द का वह खून हक़ीर जाना जिस से उसे ख़ास — ओ — मुक़द्दस किया गया था? और जिस ने फ़ज़ल के रूह की बेइज़्ज़ती की?

30 क्यूँकि हम उसे जानते हैं जिस ने फ़रमाया, “इन्तिक्राम लेना मेरा ही काम है, मैं ही बदला लूँगा।” उस ने यह भी कहा, “खुदा अपनी क्रौम का इन्साफ़ करेगा।”

31 यह एक हौलनाक बात है अगर ज़िन्दा खुदा हमें सज़ा देने के लिए पकड़े।

32 ईमान के पहले दिन याद करें जब खुदा ने आप को रौशन कर दिया था। उस वक़्त के सख़्त मुक़ाबिले में आप को कई तरह का दुःख सहना पड़ा, लेकिन आप साबितक़दम रहे।

33 कभी कभी आप की बेइज़्ज़ती और अवाम के सामने ही ईज़ा रसानी होती थी, कभी कभी आप उन के साथी थे जिन से ऐसा सुलूक हो रहा था।

34 जिन्हें जेल में डाला गया आप उन के दुःख में शरीक हुए और जब आप का माल — ओ — ज़ेवर लूटा गया तो आप ने यह बात खुशी से बर्दाश्त की। क्यूँकि आप जानते थे कि वह माल हम से नहीं छीन लिया गया जो पहले की तरह कहीं बेहतर है और हर सूरत में क्राईम रहेगा।

35 चुनाँचे अपने इस भरोसे को हाथ से जाने न दें क्यूँकि इस का बड़ा अज़्र मिलेगा।

36 लेकिन इस के लिए आप को साबित कदमी की ज़रूरत है ताकि आप खुदा की मज़ी पूरी कर सकें और यून आप को वह कुछ मिल जाए जिस का वादा उस ने किया है।

37 और कलाम में लिखा है “अब बहुत ही थोड़ा वक्त बाकी है कि आने वाला आएगा और देर न करेगा।

38 लेकिन मेरा रास्तबाज़ ईमान ही से जीता रहेगा, और अगर वो हटेगा तो मेरा दिल उससे खुश न होगा।”

39 लेकिन हम उन में से नहीं हैं जो पीछे हट कर तबाह हो जाएँगे बल्कि हम उन में से हैं जो ईमान रख कर नजात पाते हैं।

11

???? ? ? ???? ???? ???? ?

1 ईमान क्या है? यह कि हम उस में काईम रहें जिस पर हम उम्मीद रखते हैं और कि हम उस का यक़ीन रखें जो हम नहीं देख सकते।

2 ईमान ही से पुराने ज़मानों के लोगों को खुदा की क़बूलियत हासिल हुई।

3 ईमान के ज़रिए हम जान लेते हैं कि कायनात को खुदा के कलाम से पैदा किया गया, कि जो कुछ हम देख सकते हैं नज़र आने वाली चीज़ों से नहीं बना।

4 यह ईमान का काम था कि हाबिल ने खुदा को एक ऐसी कुर्बानी पेश की जो काइन की कुर्बानी से बेहतर थी। इस ईमान की बिना पर खुदा ने उसे रास्तबाज़ ठहरा कर उस की अच्छी गवाही दी, जब उस ने उस की कुर्बानियों को क़बूल किया। और ईमान के ज़रिए वह अब तक बोलता रहता है हालाँकि वह मुर्दा है।

5 यह ईमान का काम था कि हनूक न मरा बल्कि ज़िन्दा हालत में आसमान पर उठाया गया। कोई भी उसे ढूँड कर पा न सका क्योंकि खुदा उसे आसमान पर उठा ले गया था। वजह यह थी कि

उठाए जाने से पहले उसे यह गवाही मिली कि वह खुदा को पसन्द आया।

6 और ईमान रखे बगैर हम खुदा को पसन्द नहीं आ सकते। क्योंकि ज़रूरी है कि खुदा के हुज़ूर आने वाला ईमान रखे कि वह है और कि वह उन्हें अज़्र देता है जो उस के तालिब हैं।

7 यह ईमान का काम था कि नूह ने खुदा की सुनी जब उस ने उसे आने वाली बातों के बारे में आगाह किया, ऐसी बातों के बारे में जो अभी देखने में नहीं आई थीं। नूह ने खुदा का ख़ौफ़ मान कर एक नाव बनाई ताकि उस का ख़ानदान बच जाए। यूँ उस ने अपने ईमान के ज़रिए दुनिया को मुजरिम करार दिया और उस रास्तबाज़ी का वारिस बन गया जो ईमान से हासिल होती है।

8 यह ईमान का काम था कि अब्रहाम ने खुदा की सुनी जब उस ने उसे बुला कर कहा कि वह एक ऐसे मुल्क में जाए जो उसे बाद में मीरास में मिलेगा। हाँ, वह अपने मुल्क को छोड़ कर खाना हुआ, हालाँकि उसे मालूम न था कि वह कहाँ जा रहा है।

9 ईमान के ज़रिए वह वादा किए हुए मुल्क में अजनबी की हैसियत से रहने लगा। वह खेमों में रहता था और इसी तरह इज़हाक़ और याक़ूब भी जो उस के साथ उसी वादे के वारिस थे।

10 क्योंकि अब्रहाम उस शहर के इन्तिज़ार में था जिस की मज़बूत बुनियाद है और जिस का नक़शा बनाने और तामीर करने वाला खुद खुदा है।

11 यह ईमान का काम था कि अब्रहाम बाप बनने के काबिल हो गया, हालाँकि वह बुढ़ापे की वजह से बाप नहीं बन सकता था। इसी तरह सारा भी बच्चे जन नहीं सकती थी। लेकिन अब्रहाम समझता था कि खुदा जिस ने वादा किया है वफ़ादार है।

12 अगरचे अब्रहाम तक़रीबन मर चुका था तो भी उसी एक शख्स से बेशुमार औलाद निकली, तहदाद में आसमान पर के सितारों और साहिल पर की रेत के ज़रों के बराबर।

13 यह तमाम लोग ईमान रखते रखते मर गए। उन्हें वह कुछ न मिला जिस का वादा किया गया था। उन्होंने ने उसे सिर्फ दूर ही से देख कर खुश हुए।

14 जो इस किस्म की बातें करते हैं वह ज़ाहिर करते हैं कि हम अब तक अपने वतन की तलाश में हैं।

15 अगर उन के ज़हन में वह मुल्क होता जिस से वह निकल आए थे तो वह अब भी वापस जा सकते थे।

16 इस के बजाए वह एक बेहतर मुल्क यानी एक आसमानी मुल्क की तमन्ना कर रहे थे। इस लिए खुदा उन का खुदा कहलाने से नहीं शर्माता, क्योंकि उस ने उन के लिए एक शहर तैयार किया है।

17 यह ईमान का काम था कि अब्रहाम ने उस वक्त इज़हाक को कुर्बानी के तौर पर पेश किया जब खुदा ने उसे आजमाया। हाँ, वह अपने इकलौते बेटे को कुर्बान करने के लिए तैयार था अगरचे उसे खुदा के वादे मिल गए थे

18 “कि तेरी नस्ल इज़हाक ही से काईम रहेगी।”

19 अब्रहाम ने सोचा, खुदा मुर्दों को भी ज़िन्दा कर सकता है, और तबियत के लिहाज़ से उसे वाकई इज़हाक मुर्दों में से वापस मिल गया।

20 यह ईमान का काम था कि इज़हाक ने आने वाली चीज़ों के लिहाज़ से याकूब और 'ऐसव को बर्कत दी।

21 यह ईमान का काम था कि याकूब ने मरते वक्त यूसुफ़ के दोनों बेटों को बर्कत दी और अपनी लाठी के सिरे पर टेक लगा कर खुदा को सिज्दा किया।

22 यह ईमान का काम था कि यूसुफ़ ने मरते वक्त यह पेशगोई की कि इस्राईली मिस्र से निकलेंगे बल्कि यह भी कहा कि निकलते वक्त मेरी हड्डियाँ भी अपने साथ ले जाओ।

23 यह ईमान का काम था कि मूसा के माँ — बाप ने उसे पैदाइश के बाद तीन माह तक छुपाए रखा, क्योंकि उन्होंने ने देखा कि वह

खूबसूरत है। वह बादशाह के हुक्म की खिलाफ़ वरज़ी करने से न डरे।

24 यह ईमान का काम था कि मूसा ने परवान चढ़ कर इन्कार किया कि उसे फिर'औन की बेटी का बेटा ठहराया जाए।

25 आरिज़ी तौर पर गुनाह से लुत्फ़ अन्दोज़ होने के बजाए उस ने खुदा की क्रौम के साथ बदसुलूकी का निशाना बनने को तर्ज़ीह दी।

26 वह समझा कि जब मेरी मसीह की खातिर रुस्वाई की जाती है तो यह मिस्र के तमाम खज़ानों से ज़्यादा क्रीमती है, क्योंकि उस की आँखें आने वाले अज़्र पर लगी रहीं।

27 यह ईमान का काम था कि मूसा ने बादशाह के गुस्से से डरे बग़ैर मिस्र को छोड़ दिया, क्योंकि वह गोया अनदेखे खुदा को लगातार अपनी आँखों के सामने रखता रहा।

28 यह ईमान का काम था कि उस ने फ़सह की ईद मनह कर हुक्म दिया कि खून को चौखटों पर लगाया जाए ताकि हलाक करने वाला फ़रिश्ता उन के पहलौटे बेटों को न छुए।

29 यह ईमान का काम था कि इस्राईली बहर — ए — कुलज़ूम में से यूँ गुज़र सके जैसे कि यह खुशक ज़मीन थी। जब मिस्रियों ने यह करने की कोशिश की तो वह डूब गए।

30 यह ईमान का काम था कि सात दिन तक यरीहू शहर की फ़सील के गिर्द चक्कर लगाने के बाद पूरी दीवार गिर गई।

31 यह भी ईमान का काम था कि राहब फ़ाहिशा अपने शहर के बाक़ी नाफ़रमान रहने वालों के साथ हलाक न हुई, क्योंकि उस ने इस्राईली जासूसों को सलामती के साथ खुशआमदीद कहा था।

32 मैं ज़्यादा क्या कुछ कहूँ? मेरे पास इतना वक़्त नहीं कि मैं जिदाऊन, बरक़, सम्सून, इफ़ताह, दाऊद, समूएल और नबियों के बारे में सुनाता रहूँ।

33 यह सब ईमान की वजह से ही कामियाब रहे। वह बादशाहों पर गालिब आए और इन्साफ़ करते रहे। उन्हें खुदा के वादे हासिल हुए। उन्होंने ने शेर बबरों के मुँह बन्द कर दिए

34 और आग के भड़कते शोलों को बुझा दिया। वह तलवार की ज़द से बच निकले। वह कमज़ोर थे लेकिन उन्हें ताक़त हासिल हुई। जब जंग छिड़ गई तो वह इतने ताक़तवर साबित हुए कि उन्होंने ने ग़ैरमुल्की लश्क़रों को शिकस्त दी।

35 ईमान रखने के ज़रिए से औरतों को उन के मुर्दा अज़ीज़ ज़िन्दा हालत में वापस मिले।

36 कुछ को लान — तान और कोड़ों बल्कि जंजीरों और क़ैद का भी सामना करना पड़ा।

37 उनपर पथराव किया गया, उन्हें आरे से चीरा गया, उन्हें तलवार से मार डाला गया। कुछ को भेड़ — बकरियों की खालों में घूमना फिरना पड़ा। ज़रूरतमन्द हालत में उन्हें दबाया और उन पर ज़ुल्म किया जाता रहा।

38 दुनिया उन के लायक़ नहीं थी! वह वीरान जगहों में, पहाड़ों पर, गारों और गड्ढों में आवारा फिरते रहे।

39 इन सब को ईमान की वजह से अच्छी गवाही मिली। तो भी इन्हें वह कुछ हासिल न हुआ जिस का वादा खुदा ने किया था।

40 क्यूँकि उस ने हमारे लिए एक ऐसा मन्सूबा बनाया था जो कहीं बेहतर है। वह चाहता था कि यह लोग हमारे बग़ैर कामिलियत तक न पहुँचें।

12

□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□
□□□□□ □□□□□ □□

1 गरज़, हम गवाहों के इतने बड़े लश्कर से घिरे रहते हैं, इस लिए आएँ, हम सब कुछ उतारें जो हमारे लिए रुकावट का ज़रिया बन गया है, हर गुनाह को जो हमें आसानी से उलझा लेता है।

आएँ, हम साबितकदमी से उस दौड़ में दौड़ते रहें जो हमारे लिए मुक़र्रर की गई है।

2 और दौड़ते हुए हम ईसा को तकते रहें, उसे जो ईमान का बानी भी है और उसे पाए तकमील तक पहुँचाने वाला भी। याद रहे कि गो वह खुशी हासिल कर सकता था तो भी उस ने सलीबी मौत की शर्मनाक बेइज़्जती की परवाह न की बल्कि उसे बर्दाश्त किया। और अब वह खुदा के तख्त के दहने हाथ जा बैठा है!

3 उस पर गौर करें जिस ने गुनाहगारों की इतनी मुखालिफ़त बर्दाश्त की। फिर आप थकते थकते बेदिल नहीं हो जाएँगे।

4 देखें, आप गुनाह से लड़े तो हैं, लेकिन अभी तक आप को जान देने तक इस की मुखालिफ़त नहीं करनी पड़ी।

5 क्या आप कलाम — ए — मुक़द्दस की यह हिम्मत बढ़ाने वाली बात भूल गए हैं जो आप को खुदा के फ़र्ज़न्द ठहरा कर बयान करती है,

6 क्योंकि जो खुदा को प्यारा है उस की वह हिदायत करता है, क्योंकि जिसको फ़रज़न्द बनालेता है उसके कोड़े भी लगाता है

7 अपनी मुसीबतों को इलाही तर्बियत समझ कर बर्दाश्त करें। इस में खुदा आप से बेटों का सा सुलूक कर रहा है। क्या कभी कोई बेटा था जिस की उस के बाप ने तर्बियत न की?

8 अगर आप की तर्बियत सब की तरह न की जाती तो इस का मतलब यह होता कि आप खुदा के हक़ीक़ी फ़र्ज़न्द न होते बल्कि नाजायज़ औलाद।

9 देखो, जब हमारे इंसानी बाप ने हमारी तर्बियत की तो हम ने उस की इज़्जत की। अगर ऐसा है तो कितना ज़्यादा ज़रूरी है कि हम अपने रुहानी बाप के ताबे हो कर ज़िन्दगी पाएँ।

10 हमारे इंसानी बापों ने हमें अपनी समझ के मुताबिक़ थोड़ी देर के लिए तर्बियत दी। लेकिन खुदा हमारी ऐसी तर्बियत करता

है जो फ़ाइदे का ज़रिया है और जिस से हम उस की कुदूसियात में शरीक होने के काबिल हो जाते हैं।

11 जब हमारी तर्बियत की जाती है तो उस वक़्त हम खुशी महसूस नहीं करते बल्कि ग़म। लेकिन जिन की तर्बियत इस तरह होती है वह बाद में रास्तबाज़ी और सलामती की फ़सल काटते हैं।

12 चुनाँचे अपने थके हारे बाजू और कमज़ोर घुटनों को मज़बूत करें।

13 अपने रास्ते चलने के काबिल बना दें ताकि जो अज़ब लंगड़ा है उस का जोड़ उतर न जाए

14 सब के साथ मिल कर सुलह — सलामती और कुदूसियात के लिए जिद्द — ओ — जह्द करते रहें, क्योंकि जो पाक नहीं है वह खुदावन्द को कभी नहीं देखेगा।

15 इस पर ध्यान देना कि कोई खुदा के फ़ज़ल से महरूम न रहे। ऐसा न हो कि कोई कड़वी जड़ फूट निकले और बढ़ कर तकलीफ़ का ज़रिया बन जाए और बहुतों को नापाक कर दे।

16 ग़ौर करें कि कोई भी ज़िनाकार या 'ऐसव जैसा दुनियावी शख्स न हो जिस ने एक ही खाने के बदले अपने वह मौरूसी हुकूक बेच डाले जो उसे बड़े बेटे की हैसियत से हासिल थे।

17 आप को भी मालूम है कि बाद में जब वह यह बर्क़त विरासत में पाना चाहता था तो उसे रद्द किया गया। उस वक़्त उसे तौबा का मौक़ा न मिला हालाँकि उस ने आँसू बहा बहा कर यह बर्क़त हासिल करने की कोशिश की।

18 आप उस तरह खुदा के हुज़ूर नहीं आए जिस तरह इस्राईली जब वह सीना पहाड़ पर पहुँचे, उस पहाड़ के पास जिसे छुआ जा सकता था। वहाँ आग भड़क रही थी, अँधेरा ही अँधेरा था और आँधी चल रही थी।

19 जब नरसिंगे की आवाज़ सुनाई दी और खुदा उन से हमकलाम हुआ तो सुनने वालों ने उस से गुज़ारिश की कि हमें ज़्यादा कोई बात न बता।

20 क्योंकि वह यह हुक्म बर्दाश्त नहीं कर सकते थे कि “अगर कोई जानवर भी पहाड़ को छू ले तो उसपर पथराव करना है।”

21 यह मन्ज़र इतना डरावना था कि मूसा ने कहा, “मैं ख़ौफ़ के मारे काँप रहा हूँ।”

22 नहीं, आप सिय्यून पहाड़ के पास आ गए हैं, यानी ज़िन्दा खुदा के शहर आसमानी येरूशलेम के पास। आप बेशुमार फ़रिश्तों और ज़श्न मनाने वाली जमाअत के पास आ गए हैं,

23 उन पहलौठों की जमाअत के पास जिन के नाम आसमान पर दर्ज किए गए हैं। आप तमाम इंसानों के मुन्सिफ़ खुदा के पास आ गए हैं और कामिल किए गए रास्तबाज़ों की रूहों के पास।

24 नेज़ आप नए अह्द के बीच ईसा के पास आ गए हैं और उस छिड़के गए खून के पास जो हाबिल के खून की तरह बदला लेने की बात नहीं करता बल्कि एक ऐसी मुआफ़ी देता है जो कहीं ज़्यादा असरदार है।

25 चुनाँचे खबरदार रहें कि आप उस की सुनने से इन्कार न करें जो इस वक़्त आप से हमकलाम हो रहा है। क्योंकि अगर इस्राईली न बचे जब उन्होंने ने दुनियावी पैग़म्बर मूसा की सुनने से इन्कार किया तो फिर हम किस तरह बचेंगे अगर हम उस की सुनने से इन्कार करें जो आसमान से हम से हमकलाम होता है।

26 जब खुदा सीना पहाड़ पर से बोल उठा तो ज़मीन काँप गई, लेकिन अब उस ने वादा किया है, “एक बार फिर मैं न सिर्फ़ ज़मीन को हिला दूँगा बल्कि आसमान को भी।”

27 “एक बार फिर” के अल्फ़ाज़ इस तरफ़ इशारा करते हैं कि पैदा की गई चीज़ों को हिला कर दूर किया जाएगा और नतीजे में सिर्फ़ वह चीज़ें क़ाईम रहेंगी जिन्हें हिलाया नहीं जा सकता।

28 चुनाँचे आएँ, हम शुक्रगुज़ार हों। क्योंकि हमें एक ऐसी बादशाही हासिल हो रही है जिसे हिलाया नहीं जा सकता। हाँ, हम शुक्रगुज़ारी की इस रूह में एहतिराम और ख़ौफ़ के साथ खुदा की पसन्दीदा इबादत करें,

29 क्योंकि हमारा खुदा हक़ीक़तन राख कर देने वाली आग है।

13

?????? ????????????

1 एक दूसरे से भाइयों की सी मुहब्बत रखते रहें।

2 मेहमान — नवाज़ी मत भूलना, क्योंकि ऐसा करने से कुछ ने अनजाने तौर पर फ़रिश्तों की मेहमान — नवाज़ी की है।

3 जो क़ैद में हैं, उन्हें यूँ याद रखना जैसे आप खुद उन के साथ क़ैद में हों। और जिन के साथ बदसुलूकी हो रही है उन्हें यूँ याद रखना जैसे आप से यह बदसुलूकी हो रही हो।

4 ज़रूरी है कि सब के सब मिली हुई ज़िन्दगी का एहतिराम करें। शौहर और बीवी एक दूसरे के वफ़ादार रहें, क्योंकि खुदा ज़िनाकारों और शादी का बंधन तोड़ने वालों की अदालत करेगा।

5 आप की ज़िन्दगी पैसों के लालच से आज़ाद हो। उसी पर इकतिफ़ा करें जो आप के पास है, क्योंकि खुदा ने फ़रमाया है, मैं तुझे कभी नहीं छोड़ूँगा, “मैं तुझे कभी तर्क नहीं करूँगा।”

6 इस लिए हम यक़ीन से कह सकते हैं “कि खुदावन्द मेरा मददगार है, मैं ख़ौफ़ न करूँगा इंसान मेरा क्या करेगा?”

7 अपने राहनुमाओं को याद रखें जिन्होंने आप को खुदा का कलाम सुनाया। इस पर ग़ौर करें कि उन के चाल — चलन से कितनी भलाई पैदा हुई है, और उन के ईमान के नमूने पर चलें।

8 ईसा मसीह कल और आज और हमेशा तक यक़्साँ है।

9 तरह तरह की और बेगाना तालीमात आप को इधर उधर न भटकाएँ। आप तो खुदा के फ़ज़ल से ताक़त पाते हैं और इस से

नहीं कि आप मुख्तलिफ़ खानों से परहेज़ करते हैं। इस में कोई खास फ़ाइदा नहीं है।

10 हमारे पास एक ऐसी कुर्बानगाह है जिस की कुर्बानी खाना मुलाक़ात के खेमे में ख़िदमत करने वालों के लिए मनह है।

11 क्यूँकि अगरचे इमाम — ए — आज़म जानवरों का खून गुनाह की कुर्बानी के तौर पर पाक तरीन कमरे में ले जाता है, लेकिन उन की लाशों को खेमागाह के बाहर जलाया जाता है।

12 इस वजह से ईसा को भी शहर के बाहर सलीबी मौत सहनी पडी ताकि क्रौम को अपने खून से खास — ओ — पाक करे।

13 इस लिए आएँ, हम खेमागाह से निकल कर उस के पास जाएँ और उस की बेइज़्जती में शरीक हो जाएँ।

14 क्यूँकि यहाँ हमारा कोई काईम रहने वाला शहर नहीं है बल्कि हम आने वाले शहर की शदीद आरज़ु रखते हैं।

15 चुनाँचे आएँ, हम ईसा के वसीले से खुदा को हम्द — ओ — सना की कुर्बानी पेश करें, यानी हमारे होंटों से उस के नाम की तारीफ़ करने वाला फल निकले।

16 नेज़, भलाई करना और दूसरों को अपनी बर्कतों में शरीक करना मत भूलना, क्यूँकि ऐसी कुर्बानियाँ खुदा को पसन्द हैं।

17 अपने राहनुमाओं की सुनें और उन की बात मानें। क्यूँकि वह आप की देख — भाल करते करते जागते रहते हैं, और इस में वह खुदा के सामने जवाबदेह हैं। उन की बात मानें ताकि वह खुशी से अपनी ख़िदमत सरअन्जाम दें। वर्ना वह कराहते कराहते अपनी ज़िम्मेदारी निभाएँगे, और यह आप के लिए मुफ़ीद नहीं होगा।

18 हमारे लिए दुआ करें, गरचे हमें यक्रीन है कि हमारा ज़मीर साफ़ है और हम हर लिहाज़ से अच्छी ज़िन्दगी गुज़ारने के ख़्वाहिशमन्द हैं।

19 मैं खासकर इस पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि आप दुआ करें कि खुदा मुझे आप के पास जल्द वापस आने की तौफ़ीक़ बख़्से।

20 अब सलामती का खुदा जो अबदी 'अहद के खून से हमारे खुदावन्द और भेड़ों के अजीम चरवाहे ईसा को मुर्दाओं में से वापस लाया

21 वह आप को हर अच्छी चीज़ से नवाज़े ताकि आप उस की मर्जी पूरी कर सकें। और वह ईसा मसीह के ज़रिए हम में वह कुछ पैदा करे जो उसे पसन्द आए। उस का जलाल शुरू से हमेशा तक होता रहे! आमीन।

22 भाइयों! मेहरबानी करके नसीहत की इन बातों पर सन्जीदगी से गौर करें, क्योंकि मैंने आप को सिर्फ़ चन्द अल्फ़ाज़ लिखे हैं।

23 यह बात आप के इल्म में होनी चाहिए कि हमारे भाई तीमुथियुस को रिहा कर दिया गया है। अगर वह जल्दी पहुँचे तो उसे साथ ले कर आप से मिलने आऊँगा।

24 अपने तमाम राहनुमाओं और तमाम मुकद्दसीन को मेरा सलाम कहना। इतालिया मुल्क के ईमानदार आप को सलाम कहते हैं।

25 खुदा का फ़ज़ल आप सब के साथ रहे।

इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019
The Holy Bible in the Urdu language of India: इंडियन
रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

copyright © 2019 Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

Language: اردو (Urdu)

Contributor: Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution Share-Alike license 4.0.

You have permission to share and redistribute this Bible translation in any format and to make reasonable revisions and adaptations of this translation, provided that:

You include the above copyright and source information.

If you make any changes to the text, you must indicate that you did so in a way that makes it clear that the original licensor is not necessarily endorsing your changes.

If you redistribute this text, you must distribute your contributions under the same license as the original.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

Note that in addition to the rules above, revising and adapting God's Word involves a great responsibility to be true to God's Word. See Revelation 22:18-19.

2023-01-03

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 18 Apr 2025 from source files dated 19 Apr 2023

4a2fe4e0-ffe8-5377-87c7-19b3106ba2bc